शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

कामायनी : एक महाकाव्य

पी.एम.आर. जयंती
हिंदी व्याख्याता
एस.के.आर. एंड एस.के.आर. महिला शासकीय डिग्री महाविद्यालय (स्वायत्त)
नागराजुपेटा, कडप्पा (आंध्र प्रदेश)

सारांश- *कामायनी* हिंदी साहित्य के महान कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक अनुपम एवं अद्वितीय महाकाव्य है, जिसे हिंदी के छायावादी युग की सर्वोच्च उपलब्धि माना जाता है। इसका प्रकाशन सन् 1935-36 में हुआ। यह महाकाव्य 15 सर्गों में विभक्त है, जिनमें मानव मन की विविध चित्तवृत्तियों—चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य और आनंद—का अत्यंत सूक्ष्म, मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक चित्रण किया गया है। महाप्रलय के पश्चात् शेष बचे आदि मानव 'मनु' की कथा के माध्यम से कवि ने मानव सभ्यता के विकास, मानवीय भावनाओं के उत्थान-पतन, हृदय और बुद्धि के संघर्ष तथा अंततः सामरस्य और आनंद की प्राप्ति को प्रतीकात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। *कामायनी* केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि मानव जीवन के गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करने वाला महाग्रंथ है।
इस महाकाव्य में भारतीय दर्शन, विशेषतः प्रत्यभिज्ञा दर्शन, वेदांत, श्री अरविंद के चेतना-विकासवाद तथा गांधीवादी मानवतावाद का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। प्रसाद ने प्रकृति-चित्रण, प्रतीकात्मकता, संगीतात्मक भाषा, मनोविश्लेषण तथा गीतात्मक शैली के माध्यम से इसे अद्वितीय कलात्मक ऊँचाई प्रदान की है। प्रस्तुत शोध-पत्र में *कामायनी* के महाकाव्य स्वरूप, कथानक, शिल्पगत विशेषताओं, दार्शनिक आधारों तथा आधुनिक संदर्भों में उसकी प्रासंगिकता का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया है।

बीज शब्द-कामायनी, जयशंकर प्रसाद, हिंदी महाकाव्य, छायावाद, प्रतीकात्मकता, मनोवैज्ञानिक काव्य, प्रत्यभिज्ञा दर्शन, सामरस्य, मानव चेतना, हृदय-बुद्धि संतुलन।

प्रस्तावना-आधुनिक हिंदी साहित्य में महाकाव्य परंपरा का पुनर्जागरण *कामायनी* के माध्यम से हुआ। तुलसीदास के *रामचरितमानस* के पश्चात् हिंदी साहित्य को ऐसा विराट, दार्शनिक एवं कलात्मक महाकाव्य बहुत लंबे समय बाद प्राप्त हुआ। जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। वे केवल कवि ही नहीं, बल्कि नाटककार, कथाकार और चिंतक भी थे। *कामायनी* उनकी अंतिम तथा सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। छायावादी युग (1918-1936) हिंदी कविता में भावुकता, रहस्यवाद, प्रकृति-प्रेम, व्यक्तिवाद और कल्पनाशीलता का युग था। इस युग के चार प्रमुख स्तंभ—प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा—ने हिंदी कविता को नई संवेदनात्मक ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। इनमें प्रसाद की विशेषता उनकी दार्शनिक दृष्टि और गहन मनोवैज्ञानिक चेतना थी। *कामायनी* में उन्होंने मानव जीवन के बाह्य संघर्षों की अपेक्षा उसकी आंतरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक यात्रा को केंद्र में रखा है।

यह महाकाव्य पारंपरिक महाकाव्यों से भिन्न है। इसमें युद्ध, राजनीतिक संघर्ष या बाह्य वीरता का चित्रण नहीं है, बल्कि मानव मन के द्वंद्व, उसकी आकांक्षाएँ, उसकी दुर्बलताएँ और उसकी आत्मिक उन्नति का चित्रण है। यही कारण हैं कि *कामायनी* को "मानसिक महाकाव्य" या "मानवता का महाकाव्य" भी कहा जाता है।प्रसाद ने 'मनु और प्रलय' की प्राचीन भारतीय मिथकीय कथा को आधुनिक संदर्भों में रूपांतरित किया। महाप्रलय के बाद अकेले बचे मनु मानव चेतना के प्रतीक हैं। श्रद्धा और इड़ा क्रमशः भावना और बुद्धि की प्रतीक हैं। इन पात्रों के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव के मानसिक संघर्षों और सभ्यता के विकास को अत्यंत कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।
कामायनी में भारतीय दार्शनिक परंपराओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। कश्मीर शैव दर्शन का प्रत्यभिज्ञा सिद्धांत, वेदांत का अद्वैतवाद, श्री अरविंद का चेतना-विकासवाद तथा गांधीवादी सामरस्य की भावना इस महाकाव्य की मूल वैचारिक भूमि है। कवि का उद्देश्य केवल सौंदर्य-सृष्टि करना नहीं, बल्कि मानव जीवन को सामंजस्य और संतुलन की दिशा प्रदान करना है।
प्रस्तुत शोध-पत्र में *कामायनी* के कथानक, संरचना, महाकाव्यगत विशेषताओं, प्रतीकात्मकता, दार्शनिकता तथा आधुनिक संदर्भों में उसकी प्रासंगिकता का विस्तृत विवेचन किया गया है।

1. कामायनी की संरचना और कथानक-*कामायनी* 15 सर्गों में विभाजित एक विस्तृत महाकाव्य है। प्रत्येक सर्ग मानव मन की किसी विशेष भावना, प्रवृत्ति अथवा मानसिक अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। ये सर्ग हैं—चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य और आनंद।
इस महाकाव्य का प्रारंभ महाप्रलय से होता है। संपूर्ण पृथ्वी जलमग्न हो चुकी है और केवल हिमालय की एक ऊँची चोटी पर मनु जीवित बचते हैं। वे अकेले, निराश और चिंता से व्याकुल हैं। यह स्थिति केवल बाह्य विनाश का चित्र नहीं है, बल्कि मानव मन की अस्तित्वगत व्यथा का प्रतीक है।
चिंता से आशा तक-'चिंता' सर्ग में मनु का निराश और चिंतनशील रूप दिखाई देता है। वे जीवन की नश्वरता और मानव सभ्यता के विनाश से दुखी हैं। किंतु धीरे-धीरे उनके भीतर आशा का संचार होता है। 'आशा' सर्ग मानव जीवन में सकारात्मकता और पुनर्निर्माण की प्रेरणा का प्रतीक है।
श्रद्धा का आगमन-इसके बाद 'श्रद्धा' का प्रवेश होता है। श्रद्धा प्रेम, विश्वास, करुणा और हृदय की संवेदनशीलता की प्रतीक है। वह मनु को निराशा से बाहर निकालती है और जीवन में प्रेम तथा संतुलन का मार्ग दिखाती है। श्रद्धा के साथ मनु का जीवन सुख, सौंदर्य और सामंजस्य से भर उठता है।
इड़ा और बुद्धिवाद-बाद में 'इड़ा' का प्रवेश होता है, जो बुद्धि, तर्क, विज्ञान और ज्ञान की प्रतीक है। इड़ा मनु को कर्म और सभ्यता के विकास की ओर प्रेरित करती है। किंतु श्रद्धा और इड़ा के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है। यह संघर्ष वास्तव में हृदय और बुद्धि, भावना और तर्क, प्रेम और विज्ञान के मध्य द्वंद्व का प्रतीक है।
संघर्ष और निर्वेद-मध्य के सर्गों—काम, वासना, कर्म, ईर्ष्या आदि—में मानव जीवन की जटिलताओं और मानसिक दुर्बलताओं का चित्रण है। सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य में इच्छाएँ, स्पर्धा और अहंकार बढ़ते हैं। परिणामस्वरूप संघर्ष उत्पन्न होता है। 'निर्वेद' सर्ग में मनुष्य की निराशा, मोहभंग और वैराग्य का चित्रण है।
आनंद की प्राप्ति-अंतिम सर्गों—दर्शन, रहस्य और आनंद—में मनु जीवन के गहन सत्य को समझते हैं। वे अनुभव करते हैं कि जीवन का वास्तविक सुख हृदय और बुद्धि के सामंजस्य में है। अंततः वे आनंद की अवस्था को प्राप्त करते हैं। यही *कामायनी* का मूल संदेश है कि जीवन में

संतुलन, प्रेम और सामरस्य ही सच्चा आनंद प्रदान करते हैं।

2. महाकाव्य के रूप में कामायनी की विशेषताएँ

(क) सर्गबद्ध संरचना-*कामायनी* पारंपरिक महाकाव्य की भाँति सर्गों में विभाजित है। प्रत्येक सर्ग स्वतंत्र होते हुए भी संपूर्ण कथा से जुड़ा हुआ है। इससे कृति में क्रमिक विकास और एकात्मकता बनी रहती है।

(ख) उदात्त भावभूमि-महाकाव्य में सामान्यतः वीरता और महान उद्देश्यों का चित्रण होता है। *कामायनी* में बाह्य युद्ध नहीं है, किंतु मनुष्य का आंतरिक संघर्ष अत्यंत उदात्त रूप में प्रस्तुत हुआ है। मनु का चिंता से आनंद तक पहुँचना आत्मिक विजय का प्रतीक है।

(ग) प्रतीकात्मकता-यह महाकाव्य पूर्णतः प्रतीकात्मक शैली में रचा गया है—

मनु — संपूर्ण मानवता और मानव चेतना के प्रतीक
श्रद्धा — हृदय, प्रेम और संवेदना की प्रतीक
इड़ा — बुद्धि, तर्क और वैज्ञानिक चेतना की प्रतीक
महाप्रलय — मानव जीवन के संकट और विघटन का प्रतीक

इस प्रतीकात्मकता ने *कामायनी* को विश्वस्तरीय दार्शनिक काव्य का रूप प्रदान किया है।

(घ) भाषा और शैली-*कामायनी* की भाषा अत्यंत परिष्कृत, संस्कृतनिष्ठ तथा संगीतात्मक है। प्रसाद ने खड़ी बोली हिंदी को काव्यात्मक गरिमा प्रदान की है। इसमें प्रकृति-चित्रण, मानवीकरण, अनुप्रास, रूपक और उपमा अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(ङ) प्रकृति-चित्रण-प्रसाद प्रकृति के अद्वितीय चित्रकार हैं। हिमालय, नदियाँ, वन, आकाश और वर्षा के दृश्य अत्यंत सजीव एवं चित्रात्मक बन पड़े हैं। प्रकृति यहाँ केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि मानव मन की सहचरी है।

(च) दार्शनिकता-*कामायनी* का मूल स्वर दार्शनिक है। इसमें भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं का समन्वय है—

प्रत्यभिज्ञा दर्शन
वेदांत का अद्वैतवाद
श्री अरविंद का विकासवाद
गांधीवादी मानवतावाद

प्रसाद का विश्वास है कि मानव जीवन का लक्ष्य संतुलन और सामरस्य की प्राप्ति है।

3. साहित्यिक महत्व और नवीनता-*कामायनी* हिंदी साहित्य में कई दृष्टियों से युगांतरकारी कृति है। प्रसाद ने पारंपरिक महाकाव्य को आधुनिक मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधार प्रदान किया। उन्होंने बाह्य घटनाओं की अपेक्षा मानव मन की आंतरिक यात्रा को केंद्र में रखा। यह दृष्टिकोण हिंदी साहित्य में अत्यंत नवीन था।

यह कृति छायावाद की सर्वोच्च उपलब्धि मानी जाती है। इसकी भाषा, प्रतीकात्मकता, रहस्यात्मकता और दार्शनिक गहराई इसे विशिष्ट बनाती है। *कामायनी* को अनेक विद्वानों ने "छायावाद का उपनिषद" कहा है, क्योंकि इसमें जीवन और चेतना के गूढ़ रहस्यों का विवेचन है। प्रसाद ने इस महाकाव्य में आधुनिक मानव सभ्यता की समस्याओं—असंतुलन, संघर्ष, अहंकार और भौतिकवाद—की ओर संकेत किया है। साथ ही उन्होंने प्रेम, श्रद्धा, सामंजस्य और मानवीय संवेदना को समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है। *रामचरितमानस* के बाद हिंदी साहित्य में *कामायनी* को सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्य माना जाता है। इसने हिंदी कविता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई। इसकी तुलना विश्व साहित्य की दार्शनिक कृतियों से की जाती है।

4. समकालीन प्रासंगिकता-आज का युग विज्ञान, तकनीक और भौतिक प्रगति का युग है, किंतु इसके साथ ही मानव जीवन में तनाव, अकेलापन, हिंसा और असंतुलन भी बढ़ रहा है। ऐसे समय में *कामायनी* का संदेश अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। प्रसाद ने स्पष्ट किया है कि केवल बुद्धि या केवल भावना मानव जीवन को पूर्ण नहीं बना सकती। जब हृदय और बुद्धि का संतुलन स्थापित होता है, तभी वास्तविक विकास संभव है। आधुनिक समाज में यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है।इसके अतिरिक्त *कामायनी* मानवता, प्रेम, सह-अस्तित्व और सामरस्य का संदेश देती है। यह कृति मनुष्य को आत्मचिंतन, आत्मानुशासन और संतुलित जीवन की प्रेरणा प्रदान करती है।

निष्कर्ष-*कामायनी* हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। यह केवल एक महाकाव्य नहीं, बल्कि मानव जीवन के संपूर्ण दर्शन का कलात्मक एवं आध्यात्मिक दस्तावेज है। जयशंकर प्रसाद ने प्राचीन मिथकीय कथा को आधुनिक संदर्भों में रूपांतरित कर मानव चेतना के विकास की अद्भुत व्याख्या प्रस्तुत की है। इस महाकाव्य की सबसे बड़ी विशेषता इसका सामरस्यवादी दृष्टिकोण है। इसमें हृदय और बुद्धि, भावना और तर्क, व्यक्ति और समाज, सुख और दुख—सभी के बीच संतुलन स्थापित करने का संदेश दिया गया है। आज के संघर्षपूर्ण और तनावग्रस्त युग में *कामायनी* मानवता को नई दिशा प्रदान करती है। यह हमें सिखाती है कि वास्तविक आनंद बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और आत्मिक सामंजस्य में निहित है। निस्संदेह, *कामायनी* हिंदी साहित्य की अमर निधि है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा, चिंतन तथा सौंदर्यानुभूति का अखंड स्रोत बनी रहेगी।

****

संदर्भ सूची-

1. प्रसाद, जयशंकर. *कामायनी*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *हिंदी साहित्य की भूमिका*.
3. सिंह, नामवर. *छायावाद*. राजकमल प्रकाशन।
4. वर्मा, रामकुमार. *जयशंकर प्रसाद और कामायनी*.
5. Kumar, Ashish. *Myth, Mystery and Metaphor: An Allegorical Anatomisation of Jaishankar Prasad's Kamayani*. IJCRT, 2022.
6. हिंदी साहित्य इतिहास संबंधी विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथ एवं शोध-पत्र।